بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **18.05.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

अतः हम अहमदियों का यह बड़ा दायित्व है कि रोज़े के यथार्थ को समझें तथा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें जो रमज़ान का उद्देश्य है अर्थात तक़्वा पैदा करना और तक़्वा में प्रगति करना।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः बक़रः की आयत न. 184 की तिलावत फ़रमाई तथा अनुवाद पेश किया-

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُتِبَ عَلَیۡکُمُ الصِّیَامُ کَمَا کُتِبَ عَلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ لَعَلَّکُمۡ تَتَّقُوۡنَ

अनुवाद- हे वे लोगो, जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी प्रकार फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा धारण करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की कृपा से हमें एक और रमज़ान का महीना व्यतीत करने का अवसर प्रदान हो रहा है। इस महीने में मुसलमानों की बड़ी संख्या रोज़े के साथ मस्जिदों में नमाज़ों तथा तरावीह के लिए भी आती है, इस ओर ध्यानाकर्षण होता है। हमारी मस्जिद में भी इन दिनों में सामान्य दिनों की अपेक्षा अधिक लोग आते हैं। यह जो रोज़ें अनिवार्य किए गए हैं इनका उद्देश्य तक़्वा है। इस्लाम एक चिरस्थाई धर्म है, प्रलय तक रहने वाला धर्म है, इसकी शिक्षा स्थाई है तथा क़ुर्आन करीम दुनिया के हर कोने में आज अपनी मूल अवस्था में सुरक्षित है तथा तक़्वा पर चलने वालों के लिए मार्ग दर्शन है और फिर अन्तिम युग में हमारा सुधार तथा क़ुर्आन करीम का प्रकाशन तथा इसके अनुसार कर्म करने की ओर ध्यान दिलाने तथा रास्ता दिखाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा और हमें आपको मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। अतः हम अहमदियों का यह बड़ा दायित्व है कि रोज़े के यथार्थ को समझें तथा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें जो रमज़ान का उद्देश्य है अर्थात तक़्वा पैदा करना और तक़्वा में प्रगति करना। अतः रमज़ान में जब हम तक़्वा की प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं अथवा प्रयास करने वाले होंगे तो अपनी इबादतों की ओर ध्यान होगा, यदि हम तक़्वा पर चलने का प्रयत्न करते हुए रोज़े रखेंगे तो बुराईयों से बचने की ओर ध्यान होगा, अल्लाह तआला के आदेशों को तलाश करके उनके अनुसार कर्म करने की ओर ध्यानाकर्षण होगा। यदि हम बुराईयों से नहीं बच रहे तो रोज़े का उद्देश्य पूरा नहीं होता, यदि रोज़ा रखकर भी हममें घमंड है, अपने कामों तथा अपनी बातों पर अनुचित गर्व है, स्वाभिमान की आदत है, लोगों से प्रशंसा कराने की इच्छा है, अपने आधीनों से चापलूसी कराने का हम पसन्द करते हैं, जिसने प्रशंसा कर दी उस पर बड़े प्रसन्न हो गए अथवा इसकी अभिलाषा रखते हैं, तो यह तक़्वा नहीं है। रोज़ों में लड़ाई झगड़ा झूट फ़साद से यदि हम नहीं बच रहे तो यह तक़्वा नहीं है, रोज़ों में इबादतों और दुआओं तथा नेक कार्यों में यदि समय नहीं लग रहा है तो यह तक़्वा नहीं है और रोज़े का उद्देश्य पूरा नहीं कर रहे। अतः रमज़ान में बुराईयों को छोड़ना तथा नेकियों को धारण करना यही है जिसके द्वारा रोज़े का उददेश्य पूरा होता है और जब इंसान इसमें दृढ़ता के साथ जमे रहने का प्रयास करे तो फिर वास्तव में रोज़े के उद्देश्य को प्राप्त करने वाला हो सकता है अन्यथा फिर भूखा रहना है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो फ़रमाया है कि अल्लाह तआला को तुम्हारे भूखा रहने से कोई मतलब नहीं यदि तुम इन उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर रहे। कुछ लोग रोज़े के नाम पर धोखा भी देते हैं और भूखे नहीं रहते।

यह प्रकट करते हैं कि हमने रोज़ा रखा हुआ है किन्तु रोज़ा नहीं होता। ये ऐसे लोग हैं जिनको अपने खाने पीने पर भी नियन्त्रण नहीं है। जो कुछ घन्टे अल्लाह तआला के लिए अपने आपको खाने पीने से नहीं रोक सकते तथा कुछ लोग यदि पूरा दिन भूखे भी रह लेते हैं तो नमाज़ों तथा इबादतों की ओर वह ध्यान नहीं होता जो होना चाहिए, एक आध नमाज़ पढ़ली और बस। अल्लाह तआला के आदेशों तथा निषेधों की ओर कोई ध्याान नहीं। ऐसे रोज़े फिर उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे जो अल्लाह तआला ने बताया कि तुम तक़्वा धारण करो। अतः हम अहमदियों का बड़ा भारी दायित्व है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद अपने रोज़ों के इस प्रकार हक़ अदा करने के प्रयास करें जिस प्रकार उनका हक़ अदा करने का अल्लाह तआला का आदेश है। यह समझने का प्रयास करें कि तक़्वा क्या है तथा हमने उसे किस प्रकार धारण करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भिन्न भिन्न अवसरों पर तक़्वा के बारे में हमें बताया कि मुत्तक़ी कौन है। वास्तविक आनन्द तथा शांति तक़्वा के माध्यम से ही उत्पन्न होती है, न कि दुनिया की वस्तुओं में आनन्द है। इंसान को वास्तविक मोमिन बनने के लिए अपना प्रत्येक कार्य ख़ुदा तआला की इच्छा तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्ति के लिए करना चाहिए तथा यही एक बात है जो मोमिन तथा काफ़िर में अन्तर करती है और यह भी आपने हमें बताया कि अल्लाह तआला की पहचान में इंसान प्रगति करे। प्रत्येक आने वाला दिन हमें अल्लाह तआला की मअरिफ़त में आगे ले जाने वाला हो। इस समय मैं तक़्वा के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न उद्धरण पेश करूंगा। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बहुत बार ख़ुदा तआला की ओर से इलहाम हुआ कि तुम लोग मुत्तक़ी बन जाओ तथा तक़्वा की सूक्ष्म राहों पर चलो तो ख़ुदा तुम्हारे साथ होगा। फ़रमाया- मेरे दिल में बड़ा दर्द पैदा होता है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्चा तक़्वा एवं पवित्रता प्राप्त कर ले। फ़रमाया कि मैं इतनी दुआ करता हूँ कि दुआ करते करते दुर्बलता छा जाती है तथा कई बार बेहोशी तथा विनाश तक दशा पहुंच जाती है। फ़रमाया- जब तक कोई जमाअत ख़ुदा तआला की दृष्टि में मुत्तक़ी न बन जाए, ख़ुदा तआला की सहायता उसको प्राप्त नहीं हो सकती। फ़रमाया- तक़्वा सारांश है समस्त पवित्र ग्रन्थों तथा तौरात और इन्जील की शिक्षाओं का। क़ुर्आन करीम ने एक ही शब्द में ख़ुदा तआला की महानतम इच्छा तथा सम्पूर्ण प्रसन्नता को प्रकट कर दिया, अर्थात तक़्वा के शब्द में। फ़रमाया- मैं इस चिंता में हूँ कि अपनी जमाअत में से सच्चे मुत्तक़ियों, दीन को दुनिया पर प्रमुखता देने वालों तथा अल्लाह के लिए दुनिया को त्यागने वालों को प्रथक करूँ तथा कुछ दीन के काम उनके हवाले करूँ और फिर मैं दुनिया की चिंताओं में डूबे रहने वालों तथा रात दिन मुर्दार दुनिया की ही चाह में जान खपाने वालों की कुछ भी चिंता नहीं करूँगा।

अतः यह दर्द है आपका, मेरी जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति ऐसा हो जो तक़्वा पर चलने वाला हो, न कि केवल दुनिया का लोभ ही उसे खाए जाए। फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि तक़्वा पर चलना ही वास्तव में शरीअत का सारांश है और यदि दुआ को क़बूल कराना चाहते हो तो तक़्वा पर चलो, आप फ़रमाते हैं-

अहमदियों को सम्बोधित करते हुए फ़रमा रहे हैं- चाहिए कि वे तक़्वा की राह धारण करें क्यूँकि तक़्वा ही एक ऐसी चीज़ है जिसको शरीअत का सारांश कह सकते हैं और यदि शरीअत को संक्षेप में बयान करना चाहें तो शरीअत का मूल तक़्वा ही हो सकता है। तक़्वा की सीढ़ियाँ तथा स्तर अनेक हैं किन्तु यदि इसकी इच्छा रखने वाला अपने संकल्प में सच्चा होकर आरम्भिक अवस्थाओं तथा मार्गों को दृढ़ता पूर्वक तथा निष्ठा पूर्वक तय करे तो वह उस सत्यगामी तथा सत्याभिलाषी होने के कारण उच्चत स्तर को पा लेता है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ मानो अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दुआओं को क़बूल फ़रमाता है, यह मानो उसका वादा है तथा उसके वादों में विरोधाभास नहीं होता, जैसा कि फ़रमाया- إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ अतः जिस अवस्था में तक़्वा की शर्त दुआ की क़बूलियत के लिए एक अटूट शर्त है, एक मूल शर्त है जिसे अलग नहीं किया जा सकता तो एक इंसान मूर्छित और पथभ्रष्ट होकर यदि दुआ को क़बूल कराना चाहे तो क्या वह मूर्ख और नादान नहीं है। अतः हमारी जमाअत के लिए अनिवार्य है कि जहाँ तक सम्भव हो प्रत्येक उनमें से तक़्वा की राहों पर क़दम मारे ताकि दुआ की क़बूलियत का आनन्द तथा स्वाद प्राप्त करे तथा ईमान की वृद्धि में भागीदार हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः रमज़ान से लाभ प्राप्त करने के लिए यह मूल सिद्धांत है कि हमारे रोज़े तथा हमारा प्रत्येक कर्म तक़्वा प्राप्ति के लिए हो। अनेक लोग कहते हैं, दुआएँ क़बूल नहीं होतीं हमने बड़ी दुआएँ कीं। इनको पहले अपने भीतर स्वयं देखना चाहिए कि क्या दीन भीतर छाया हुआ है? तक़्वा पर चलने वाले हैं? अथवा दुनिया का लोभ अधिक हो गया है? अतः दुआ की क़बूलियत के लिए तक़्वा शर्त है। फिर आप फ़रमाते हैं कि वास्तव में मुत्तक़ियों के लिए बड़े बड़े वादे हैं तथा इससे बढ़कर क्या होगा कि अल्लाह मुत्तक़ियों का वली होता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ख़ुदा मुत्तक़ी के लिए हर कठिनाई में एक राह पैदा कर देता है तथा उसको परोक्ष से उस कठिनाई से बचने के साधन पैदा कर देता है। उसको इस रूप में जीवन सामग्री देता है कि उसको पता भी न लगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह दुआ भी बहुत करनी चाहिए तथा इस दुआ को याद रखना चाहिए, सदैव याद रखे तो तक़्वा पर चलने की ओर भी ध्यानाकर्षण होता रहता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- इंसान की बड़ी से बड़ी अभिलाषा दुनिया में यही है कि उसको सुख और आराम मिले तथा उसके लिए अल्लाह तआला ने एक ही मार्ग निश्चित किया हुआ है जो तक़्वा का मार्ग कहलाता है तथा दूसरे शब्दों में इसको क़ुर्आन शरीफ़ की राह कहते हैं तथा इसका नाम सिरात-ए-मुस्तक़ीम रखते हैं। कोई यह न कहे कि काफ़िरों के पास भी धन सम्पत्ति होती है तथा वे अपनी समृद्धि और भोग विलास में डूबे रहते हैं। फ़रमाया- मैं तुम्हें सच सच कहता हूँ कि वे धिक्कारे हुए दुनियादारों तथा प्रत्यक्ष के लोभ में डूबे हुए लोगों की आँखों में समृद्ध दिखाई देते हैं किन्तु वास्तव में वे एक जलन और दुःख में लिप्त होते हैं। तुमने उनके चेहरों को देखा है किन्तु मैं ऐसे लोगों के दिलों पर दृष्टि रखता हूँ, वे एक प्रकार की कठिनाईयों, बेड़ियाँ और बोझ तले जकड़े हुए हैं, जैसे फ़रमाया- اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا अर्थात निःसन्देह हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें तथा तौक़ (बन्दियों के गले पड़ी लोहे की हसली) और नर्क तय्यार कर रखे हैं। मुत्तक़ी सच्ची समृद्धि एक झोंपड़ी में पा सकता है जो दुनियादार और लोभ लालच के चाहने वाले को एक महान दुर्ग में भी नहीं मिल सकती।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- संतोष हो, तक़्वा हो, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति प्रमुख हो तो कम साधनों में भी इंसान गुज़ारा कर लेता है तथा शांति और आनन्द उत्पन्न हो जाता है जबकि बड़े बड़े धनवानों को वह आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। फ़रमाया कि जितनी अधिक दुनिया मिलती है उतनी ही अधिक बलाएँ सामने आती हैं। अतः याद रखो कि वास्तविक आनन्द एवं स्वाद सांसारिक लोगों के भाग्य में नहीं आया। यह मत समझो कि धन की अधिकता, अच्छे अच्छे कपड़े तथा खाने, किसी प्रसन्नता का कारण बन सकते हैं, कदाचित नहीं बल्कि इसका आधार तक़्वा पर ही है। जबकि इन सारी बातों से ज्ञात हो गया कि सच्चे तक़्वा के बिना कोई शांति तथा सुख मिल ही नहीं सकता तो पता करना चाहिए कि तक़्वा के अनेक विभाग हैं जो मकड़ी के जाल के तारों के समान फैले हुए हैं। तक़्वा मनुष्य की समस्त शारीरिक, भाषिक तथा आस्था इत्यादि से सम्बद्ध है। हुज़ूर-ए-अनवर ने इसको स्पष्ट करते हुए फ़रमाया कि आस्था में भी तक़्वा हो, भाषा में भी तक़्वा हो, सामान्य चरित्र में भी तक़्वा हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः ज़बान को दूसरों को कष्ट देने से रोकने का ही केवल आदेश नहीं है अपितु दिखावा, आत्म ख्याति का प्रदर्शन इत्यादि भी नेकियों तथा तक़्वा से दूर हटाने वाला बन जाता है। आपने फ़रमाया- देखो अल्लाह तआला ने اِيَّاكَ نَعْبُدُ की शिक्षा दी है। अब सम्भव था कि इंसान अपनी शक्ति पर भरोसा कर लेता तथा ख़ुदा से दूर हो जाता, इस लिए साथ ही اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ की शिक्षा दे दी कि मत समझो कि यह इबादत जो मैं करता हूँ अपनी शक्ति और सामर्थ्य से करता हूँ, कदाचित नहीं बल्कि अल्लाह तआला का समर्थन जब तक न हो तथा वह पवित्र अस्तित्व जब तक शक्ति एवं समर्थन न दे कुछ भी नहीं हो सकता। फ़रमाया कि ज़बान के द्वारा इंसान तक़्वा से दूर चला जाता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो व्यक्ति नाभि के नीचे के अंग तथा ज़बान को बुराई से बचाता है उसकी जन्नत का दायित्व मुझ पर है। आप फ़रमाते हैं कि तुम अपनी ज़बान पर नियन्त्रण करो, न कि ज़बानें तुम पर राज करें और अनाप शनाप बोलते रहो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि बात यह है जब इंसान मानसिकता को छोड़ कर ख़ुदा के निश्चय की परिधि में चलता है तो उसका कोई काम नाजायज़ नहीं होता बल्कि प्रत्येक कार्य अल्लाह तआला की इच्छानुसार होता है। जहाँ लोग परीक्षा की कठिनाई में पड़ते हैं वहाँ यह बात अवश्य होती है कि वह कार्य ख़ुदा के निश्चय के अनुकूल नहीं होता। ऐसा व्यक्ति अपनी भावनाओं के नीचे चलता है उदाहरणतः क्रोध में आकर कोई कार्य कर बैठता है जिसके कारण मुक़दमे बन जाया करते हैं, फ़ौजदारियाँ हो जाती हैं। परन्तु यदि किसी का यह निश्चय हो कि अल्लाह की किताब से पूछे बिना वह न तो ठहरेगा और न ही आगे बढ़ेगा तो निश्चित ही अल्लाह की किताब उसे विमर्श देगी।

फिर हमें अपने जीवन को निर्धनता तथा विनयता के साथ व्यतीत करने की हिदायत देते हुए आप फ़रमाते हैं कि तक़्वा वालों के लिए शर्त यह है अपना जीवन दरिद्रता एवं विनम्रता के साथ व्यतीत करें, यह तक़्वा की एक शाखा है जिसके माध्यम से हमें अनुचित क्रोध का मुक़ाबला करना है। बड़े बड़े सत्यपुरुष और वलीअल्लाह तथा सत्यगामियों के लिए अन्तिम तथा कड़ी मंज़िल क्रोध से बचना ही है। अहंकार का पिंदार, क्रोध के कारण पैदा होता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें अथवा एक दूसरे को घमंड अथवा हीन दृष्टि से देखें। ख़ुदा जानता है कि कौन बड़ा है अथवा छोटा कौन है, यह एक प्रकार का अपमान है। तुम एक दूसरे का चिड़ कर नाम न लो, यह कार्य घोर पापियों का है। जो व्यक्ति किसी को चिड़ाता है वह न मरेगा जब तक कि वह स्वयं इसी प्रकार न चिड़ाया जाएगा। अपने भाईयों को हीन न समझो। जब एक ही स्रोत से सारे पानी पीते हैं तो कौन जानता है कि किस के भाग्य में अधिक पानी है। मुकर्रम व मुअज़्ज़म (आदरणीय व महान) कोई दुनिया के नियमानुसार नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला की दृष्टि में बड़ा वही है जो मुत्तक़ी है। إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللهِ أَتْقَكُمْ अर्थात- निःसन्देह अल्लाह तआला की दृष्टि में अधिक सम्मनित वही है जो मुत्तक़ी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मोमिन किसी तंगी में भी ख़ुदा से कुधारणा नही करता तथा उसको अपनी त्रूटियों का परिणाम समझकर उससे दया और कृपा की प्रार्थना करता है और जब वह ज़माना बीत जाता है तथा उसकी दुआएँ फल लाती हैं तो वह उस विनय के ज़माने का भूलता नहीं अपितु उसे याद रखता है। फ़रमाते हैं- अल्लाह तआला उसकी सहायता एवं समर्थन में होता है जो तक़्वा धारण करे। केवल इस बात पर ही प्रसन्न नहीं होना चाहिए कि हम इस जमाअत में शामिल हो गए हैं। अल्लाह तआला का साथ तथा सहायता उस समय मिलेगी जब सच्च तक़्वा हो और फिर नेकी साथ हो। ख़ुदा तआला भी इंसान के कर्मों का दैनिक लेखा जोखा बनाता है। इंसान को भी अपनी प्रस्थितियों का एक दैनिक लेखा जोखा तय्यार करना चाहिए तथा उसमें विचार करना चाहिए कि नेकी में कहाँ तक आगे क़दम रखा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला हमें इस रमज़ान में तक़्वा के साथ रोज़े रखने तथा इबादत करने तथा शेष अधिकारों के निर्वाह का सामर्थ्य प्रदान करे तथा प्रत्येक दृष्टि से यह रमज़ान बरकत वाला हो, जमाअत के लिए भी तथा मुसलमानों के लिए भी, विश्व के लिए भी विशेष रूप से दुआएँ करें। पाकिस्तान में जो जमाअत के हालात हैं तथा इनमें प्रति दिन कठोरता पैदा होती जा रही है, अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाए। जहाँ रोज़ों के हक़ अदा करने वाले हों वहाँ तक़्वा पर चलते हुए ये हक़ अदा करने वाले हों, दुआओं की ओर ध्यान देने वाले हों। इसी प्रकार अल्लाह तआला मुसलमानों पर भी दया करे तथा इनके नेताओं को और लीडर शिप को और आलिमों को बुद्धि और विवेक प्रदान करे कि ज़माने के इमाम को मानने वाले हों। दुनिया युद्ध की ओर जिस तेज़ी से बढ़ रही है उसमें अब और अधिक रोक पैदा होने के संकेत अब दिखाई नहीं दे रहे इस लिए अल्लाह तआला मुसलमानों को तथा अहमदियों को इन युद्धों के बुरे प्रभाव से बचाकर रखे तथा साधारण रूप से मानव जाति को भी बुरे प्रभाव से बचाए। यदि अब भी अल्लाह तआला की दृष्टि में इन लोगों का सुधार हो सकता है तथा कोई साधन बन सकता है कि इनका सुधार हो जाए, ख़ुदा को पहचानने वाले हों तो अल्लाह तआला वह प्रस्थितियाँ पैदा करे कि अल्लाह तआला को पहचानें तथा अपने विनाश से ये बच सकें।